काल-चक्र

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

काल चक्रपर ससरल जाइत अछि संसारक जिनगी
काल्हि रहय धधकैत ज्वाल आ आइ मिझायल चिनगी

घन-घमंड उमड़ल छल, चमकय रहि-रहि विद्युल्लेखा
पावस गेल गगन-मंडलमे रहल न मेघक रेखा

शरदक होइत विकास कासकेर हास मधुर छिड़िआयल
सिङरहार झड़ि, बाँटि सुरभि पुनि कालक गाल समायल

हेमन्तक आङनमे सगरो बाध भरल छल अन्न
आइ ततऽ देखबामे अबइछ कनइत खेत हकन्न

अबितहि निष्ठुर शिशिर ककर नहि कयलक कंपित गात
महावृक्ष धरिहुक शाखासँ पातक कयल निपात

हलसल फुलसल नवोल्लास लऽ आयल फेर वसन्त
नव किसलयसँ भरल- पुरल अछि ठूठ गाछ पर्यन्त

अहह ! सुनह, घबराह न, त्यागह जनु जीवनसँ आशा
काल करैत रहैछ जगत भरि एहिना खेल तमाशा

स्वर्णथारमे पावि रहल छी जे जन मेवा मिसरी
आओत काल झपटि लऽ जायत से टा क्यो जनु बिसरी

कालक गाल विशाल तते जे समा जाय आकाश
परम सत्य थिक सृष्टिक संगहि रहइछ महाविनाश

मिश्रटोला, दरभंगा ।

बिहाड़ि

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

सुनै छिऐ' दस लोकक मुँहसँ
एकरे लोक बिहाड़ि कहै' छै'

पहिने दम सधने रहैत छै'
दसो दिशा भयभीत भेल सन
ऊमसमे कण्ठो सुखाइ छै'
मोन रहै' छै' तीत भेल सन
सहसा प्रबल प्रचण्ड पबन
वन - उपवनकेँ झकझोरि दैत छै'
प्रकृतिक कोमल अंग - अंगकेँ
ठामहि पकड़ि मचोड़ि दैत छै'
बड़का - बड़का गाछ - वृक्ष सभ
एकर डरेँ बपहारि कटै' छै'
तकरे लोक बिहाड़ि कहै' छै'।

देखिते - देखिते उनटि जाइ छै'
बड़का - बड़का पड़ल गेँड़ सभ
अड़रा - अरड़ा टूटि खसै' छै'
गाछक मोटका सबल फेँड़ सभ
फूल - पात - ठहुरीक बात की,
जड़िसँ सीर उपाड़ि दैत छै'
सिंहक बच्चा जकाँ कते
दिग्गजकेँ पकड़ि पछाड़ि दैत छै'
ठाढ़े ठाढ़ चितंग भेल जे
तकरे असली हारि कहै' छै'
एकरे लोक बिहाड़ि कहै' छै'।

मिश्र टोला, दरभंगा।

दू टुकरी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

आम

आम होइछ अम्मत आ आमे मधुर होइछ,
किन्तु से अवस्थाकेर धर्म बुझबाक थीक
रहै छै' अवस्था जँ अपरिपक्व, साधारण जन
आम जकाँ सक्कत ओ अम्मत रहैत अछि
जहिना बैशाख तथा जेठक प्रचण्ड रौद
तपबै छै पकबै छै रस-पूरित अन्तरकेँ
अनायास हरिअरका खुइँचाकेर भीतरसँ
लाली विहुँसैत आबि ऊपर निखरैत छैक

तीख-चोख आमिल-अँचार होइछ काँचेकेर
किन्तु मधुर अम्मट तँ पकलेकेर होइत छैक।
जीवनकेर ताप, बिघ्न- बाधाकेर अन्हड़सँ
जा धरि नहि भेंट होइछ, एहिना इतराइत रहब,
आखिर तँ बौआ छी, बौआइत-बौआइत
आइ ने तँ काल्हि फेर बाटेपर भेंट होयत ।
बौआकेँ अपनो जँ बौआ भऽ जाइत छनि
अनायास बाट तखन पुरना धऽ लैत छथि।

कटहर

कटहरमे लस्सा तँ प्रकृतिकेर देन थिकै
बिनु लस्साकेर कतहु कटहर भेलैक अछि ?
ऊपरसँ काँटोकाट गमगम करैत, मुदा
फाँड़ि कऽ जँ देखब तँ भीतरसँ छहोछित्त
कमरीकेँ ओढ़ने आ आँठीकेँ गिड़ने 'को'
नेढ़ाकेँ कसिया कऽ धयने रहैत अछि ।

तकरा जँ खयबाकेर आकांक्षा मनमे हो
लस्सा लगबाक डऽर एकदम भगाय दियऽ
रही जँ सतर्क तखन कथी ले' देखार होयब
कड़ूतेल लगाय लेल करी कने मोछपर !

मिश्रटोला, दरभगा ।

दू टुकरी

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

आम

आम होइछ अम्मत आ आमे मधुर होइछ,
किन्तु से अवस्थाकेर धर्म बुझबाक थीक
रहै छै' अवस्था जँ अपरिपक्व, साधारण जन
आम जकाँ सक्कत ओ अम्मत रहैत अछि
जहिना बैशाख तथा जेठक प्रचण्ड रौद
तपबै छै पकबै छै रस-पूरित अन्तरकेँ
अनायास हरिअरका खुइँचाकेर भीतरसँ
लाली विहुँसैत आबि ऊपर निखरैत छैक

तीख-चोख आमिल-अँचार होइछ काँचेकेर
किन्तु मधुर अम्मट तँ पकलेकेर होइत छैक।
जीवनकेर ताप, विघ्न - बाधाकेर अन्हड़सँ
जा धरि नहि भेंट होइछ, एहिना इतराइत रहब,
आखिर तँ बौआ छी, बौआइत-बौआइत
आइ ने तँ कालिह फेर बाटेपर भेंट होयत।
बौआकेँ अपनो जँ बौआ भऽ जाइत छनि
अनायास बाट तखन पुरना धऽ लैत छथि।

कटहर

कटहरमे लस्सा तँ प्रकृतिकेर देन थिकै
बिनु लस्साकेर कतहु कटहर भेलैक अछि?
ऊपरसँ काँटोकाट गमगम करैत, मुदा
फाँड़ि कऽ जँ देखब तँ भीतरसँ छहोछित्त
कमरीकेँ ओढ़ने आ आँठीकेँ गिड़ने 'को'
नेढ़ाकेँ कसिया कऽ धयने रहैत अछि।

तकरा जँ खयबाकेर आकांक्षा मनमे हो
लस्सा लगबाक डऽर एकदम भगाय दियऽ
रही जँ सतर्क तखन कथी ले' देखार होयब
कड़ूतेल लगाय लेल करी कने मोछपर!

मिश्रटोला, दरभंगा।

मैथिली--बाबू भोलालालदास = शून्य
बाबू भोलालालदास + मैथिली = अस्तित्व

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

ई बात सत्य जे मैथिली भाषा-साहित्यक आधारभूमिमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्ण(न)रत्नाकर सदृश गद्य ग्रन्थ छैक., मैथिलकोकिल महाकवि विद्यापतिक गौरवमय परम्परा छैक., कवीश्वर चन्दा झाक आधुनिकदृष्टिबोध छैक आ छैक शत-शत साहित्यकारक त्यागमय साधना, परन्तु जखन एकर अस्तित्वक समक्ष प्रश्नवाचकचिह्न आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक तखन ओहि प्रश्नवाचक चिह्नक समुचित समाधान करबाक हेतु अपन सम्पूर्ण सांसारिक सुख-ऐश्वर्यकेँ तिलांजलि दऽ छाती तानि अस्थिवान कयनिहार तेजोमय व्यक्तिक संज्ञा थिकनि बाबू भोलालाल दास । हिनका प्रसंग आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क ई उक्ति—

"जनिका नहि परवाहि, आहि,
क्यौ कहओ बताहो
मैथिलीक हित लड़बे उचित
पहिरि सन्नाहो
जे विधान-विद्वान, सुकवि,
सम्पादक वक्ता
उभय भारती मिथिला हित
नित जे अधिवक्ता
दास मैथिलिक लाल छथि
जे अमोल भोला भला
माथ मातृभाषाक नहि झुकओ,
कटओ बरु निज गला"

सर्वथा चरितार्थ अछि ।

एक अधिवक्ताक रूपमे भोला बाबू कर्मक्षेत्रमे प्रवेश कयलनि । ओकालति कोन रूपेँ चललनि तकर प्रमाण थिक बलभद्रपुरलहेरियासरायमेहुनकनिजीमकान, हिन्दीक सुप्रतिष्ठितलेखकक पंक्तिमेआसीन भऽ गेल छलाह जकर प्रमाण थिक ओहि समयक 'चाँद'क फाइल । यदि एहि सभक लोभ-लाभमे फँसि गेल रहितथि, जे जनसाधारणमे देखल जाइत अछि, तँ मैथिली साहित्यक इतिहासकस्वरूपेआजुक इतिहाससँ भिन्न रहैत, कदाचित मगही-भोजपुरी आदि भाषा जकाँ एकरो इतिहास अलिखिते रहि गेल रहैत, परन्तु से भेल नहि, जगदम्बा जानकीक कृपासँ आ मैथिलीभाषी जनताक सौभाग्यसँ भोला बाबूक माथपर मातृभाषाकधुनि ताहि रूपेँ सवार भेलनि जे आमरण मैथिलीक चिन्तनसँ मुक्त नहि भऽ सकलाह । जीवनक अन्तिम क्षण धरि एकरे विकास, एकरे अधिकारक प्रसंग सोचैत रहि गेलाह ।

मैथिलीकेँ प्रतिभावान पुत्रक कमी कहियो नहि रहलैक,परन्तु संक्रमण कालमे एकर सुरक्षा यदि नहि भेलैक तँ भविष्य अन्धकारमय भऽ जयतैक एहि सत्यकेँ सभसँ बेसी हृदयंगम कयलनि भोला बाबू । ओना, इतिहासमे मैथिलीक रक्षाक हेतु तत्पर व्यक्तिमे बहुतो लोकक नाम गनाओल जाइत अछि, ई सभ काज एहन होइत छैक जतऽ 'एकसर वृहस्पतियो झूठ' लोकोक्तिकेँ चरितार्थ होयबाक अवसर भेटैत छैक, परन्तु एकमात्र वृहस्पतिकेँ हटा देला सन्ताँ जेना सम्पूर्ण देवमण्डली

बाबू भो लाल दास

गुरुवि ीन भऽ जयताह, तहिना भोला बाबूके 'माइनस' कऽ देला उत्तर मैथिलीक अस्तित्वक समक्ष प्रश्नवाचक चिह्न स्पष्ट देखबामे आओत ।

हमरा ई स्मरण नहि अछि जे पहिले पहिल भोला बाबूसँ परिचय कहिया, कतऽ आ ककरा माध्यमसँ भेल, परन्तु निकट सम्पर्कमे अयलहुँ मैथिली साहित्य परिषदक काशी अधिवेशनमे । पूर्वसँ ओहि अधिवेशनक हेतु निर्वाचित अध्यक्ष छलाह डा० जनार्दन मिश्र, परन्तु ओ अनुपस्थित रहलाह । तखन काशीएमे परिषदक कार्यकारिणी समिति सर्वसम्मतिसँ बाबू भोलालालदासकेँ अध्यक्ष निर्वाचित कयलकनि । मैथिली आन्दोलनसँ सम्पृक्त रहलाक कारणेँ हुनक नाम तँ जनैत छलियनि । मैट्रिकमे हुनके लिखल मैथिली व्याकरण प्रबोध पाठ्यग्रन्थमे छलनि, जे छात्रकेँ पढ़बऽ पड़ैत छल, मुदा समीपसँ ने हुनका विचारसँ परिचय भेल छल, ने साहित्यसँ ।

ओहि समय लेखनशैली (वर्त्तनी) केँ लऽ कऽ मैथिली क्षेत्रमे वैचारिक संघर्ष चलैत छलैक । आचार्य रमानाथ झाजी 'कएल, भए' अर्थात् एकार शैलीकेँ छोड़ि 'भय, भऽ, कयल, कैल' आदि रूपमे अशुद्ध घोषित कऽ देने छलथिन । यद्यपि पूर्वमे हम अपनहुँ 'भए' सैह लिखैत छलहुँ । गुदगुदी नामक कवितासंग्रहकपहिल संस्करणक भूमिकामे स्पष्ट शब्देँ उद्घोषितो कयने छलहुँ जे एहिमे साहित्य पत्रक शैली मानल गेल अछि, परन्तु अन्य शैलीकेँ अशुद्ध नहि मानैत छलिऐक । कारण, म. म. प. मुरलीधर झा, म. म. बख्शी मुकुन्द झा, राजपण्डित बलदेव मिश्र, स्वर्गीय भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', कविवर सीताराम झा, व्यंग्य सम्राट् प्रो. श्री हरिमोहन झा प्रभृति मैथिलीक निर्माता साहित्यकारलोकनि एकर शैलीसँ भिन्न शैलीमे लिखैत छलाह । जखन पाणिनि सदृश वैयाकरण अपन पूर्ववर्त्ती आचार्यलोकनि द्वारा प्रयुक्त शब्दकेँ अशुद्ध नहि मानि "लङः शाकटायनस्य, अवङ् स्फोटायनस्य, मिते चर्षौ" आदि सूत्रक विधान कयलनि, परन्तु प्रयोगकेँ अशुद्ध नहि मानलनि तखन हम पूर्ववर्त्ती साहित्यकारक अशुद्ध मानबाक धृष्टता कोना करितहुँ ? ओहि अशुद्धिक घोषणासँ हमरापर प्रतिक्रिया भेल आ हमरो वैदेही मासिक पत्रक सम्पादनक अवसर भेटल तँ दोलेँ शैलीपर दृढ़तासँ बल देबऽ लगलिऐक ।

भोला बाबू यद्यपि मिथिला ओ भारतीमे दोलेँ शैलीक प्रयोग करैत छलाह, मुदा व्याकरणमे एकार शैली छलनि । हम एक दिन कृत्रिम कऽ एहि बिन्दुपर विचार करबाक हेतु संगहि व्याकरणमे कतिपय स्थलमे सन्देह छल तकर निराकरण करबाक हेतु भोला बाबूसँ भेँट करऽ गेलियनि । मिथिला अथवा भारतीक फाइल तावत देखबामे नहि

आयल छल । हमरा आशंका छल जे स्वर्गीय रमानाथ बाबू जकाँ ईहो कट्टर होयताह, परन्तु ओ हमर विचार गम्भीरता सँ सुनलनि आ सुनबे नहि कयलनि, सहमति व्यक्त करैत कहलनि--हम तँ मिथिला ओ भारतीक सम्पादनक क्रममे दोलेँ लिखिते छलहुँ परन्तु पाठ्यग्रन्थक चयन-समितिमे तँ वैह लोकनि छथि आ एकरा पाठ्यग्रन्थमे स्वीकृत करयबाक छल, तेँ अगत्या हमरा एकारमे बदलऽ पड़ल । तकर बाद जे संस्करण छपलनि तँ तकर भूमिकामे हमर नामोल्लेखपूर्वक जाहि-जाहि बिन्दुपर विचार कयने छलहुँ ताहि ठाम संशोधनो कऽ देलथिन । एहि घटनासँ हमरा हुनक उदार विचार ओ विशाल हृदयक परिचय भेटल ।

'मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण' नामक पुस्तक लिखबाक क्रममे जखन मिथिला ओ भारतीक फाइल पढ़बाक सुयोग भेल तखन भोला बाबूक अन्तरमे मैथिलीक अधिकार-प्राप्तिक हेतु धधकैत आगि आ हुनका लेखनीक ओजसँ परिचित भऽ सकलहुँ । ओहि समयक सामग्री सभ देखलाउत्तर जे निर्भीकता, जे आगि, जे लगन भोला बाबूमे दृष्टिगोचर होइछ से अन्यत्र दुर्लभ प्रतीत होइछ ।

मैथिलीक सेवासँ जखन दुइ पाइ प्राप्तिक आशा जगलैक तखन मैथिलीक क्षेत्रमे मातृभाषा सेवकक बाढ़ि आबि गेल, परन्तु लोभ-लाभक अवसर अबिते अनासक्त योगी जकाँ भोला बाबू परिषदक मन्त्रिपदसँ फराक भऽ गेलाह, परन्तु जाबत धरि अधिकार भेटबामे विलम्ब छलैक ताबत धरि तथाकथित पैघ लोकसभक दुआरि खटखटबैत-खटखटबैत कोन प्रकारक अपमानक गरल पीबऽ पड़लनि, कोन-कोन तरहक कष्ट उठाबऽ पड़लनि ताहिपर प्रकाश पड़ि सकत भोला बाबूक लिखल आत्मसंस्मरणक प्रकाशनक बाद, जे लिखबाक आग्रह हम बारम्बार करैत रहैत छलियनि । प्रायः पटनाक चित्रगुप्त सभा उपर्युक्त पुस्तकक प्रकाशन कऽ रहल अछि ।

ओही पुस्तकके लिखबाक क्रममे बहुतो पुरान फाइल सभ हमरा लगसँ लऽ गेल करथि आ आपस कऽ देथि । एक बेर मिथिलाक फाइल लऽ गेलाह से आपस करबामे विलम्ब भेलनि । हमरा प्रयोजन भेल तँ आनऽ गेलहुँ । कहलनि--हमर काज तँ भऽ गेल, परन्तु संकोचवश हम आपस करऽ नहि जाइत छलहुँ । तखन परम दीनताक स्वरमे कहऽ लगलाह--दुइ वर्षक हमर एकमात्र पौत्र एक दिन दू टा पन्ना फाड़ि देलक ताहि हेतु क्षमा याचनो करबामे संकोच होइत अछि । हम तँ लाजेँ गड़ि गेलहुँ । कहलियनि--नेना तँ नेने थिक, एहि हेतु क्षमा याचनाक कोन प्रयोजन । भोला बाबू बीचेमे कहि उठलाह--एहन अमूल्य सम्पत्ति तँ हमरे सुरक्षित रखबाक चाही, हम तँ से नहि कऽ पौलहुँ । ओ तँ अहाँ सुरक्षित रखने छलहुँ, तेँ हम किछु लिखि पौलहुँ । तखन एकर एहन दुर्दशा होइक से उचित ? जखन ई पन्ना फाटल तँ हमरा बुझना गेल जे क्यो हमरा हृदयकेँ चीरि देलक अछि । ई तँ अहूँ बुझैत होयबैक, अहूँ तँ साहित्य-साधनामे रहिते छी । साहित्यकारकेँ अपन रचनाक प्रति औरस सन्तानसँ कम ममत्व नहि होइत छैक । एतबा कहैत ओहि फाटल पन्ना दिस तेना करुणार्द्र दृष्टिसँ ताकऽ लगलाह जेना कोनो माता अपना सन्तानकेँ अस्पताली खाटपर पड़ल रहला उत्तर तकैत हो ।

मातृभूमि ओ मातृभाषाक हेतु एहि अस्थिदानी महापुरुषक क्षीणतर कायामे कतेक पैघ आत्मा ओ कोन उदात्त विचार निवास करैत छल तकर साक्षात् दर्शन भेल । ओ पुनः कहलनि--नेना की जानय प्रसूतीक पीड़ा ? आन एकर महत्व की बूझत ।

29 मइ 1977 ई०क साढ़े चारि बजे भोरे उठलहुँ तँ क्यो फाटककेँ खटखटा रहल छल । बाहर देखलहुँ, मैथिलीक मधुर गायक कवि श्री श्रीमन्त पाठक ठाढ़ छथि । समीप जाइतहिँ कहलनि--बाबू भोलालाल दास राति चलि देलनि । हृदयपर एक धक्का लागल । शीघ्रतामे फुलबाड़ीमेसँ थोड़ेक फूल तोड़ि सोझे हुनक लहेरियासराय आवासपर पहुँचलहुँ । चिरनिद्रामे लीन भोला बाबूक शवपर पुष्पांजलि दैत बुझना गेल मैथिलीक उत्थानक एक कालखण्ड चिरनिद्रामे लीन भऽ गेल अछि ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

जिनगी जी लै'छी

: श्री श्रीमन्त पाठक :

जीबऽ ले' विवश बनल छी तेँ
कहुनाकऽ जिनगी जी लै' छी

नित तिरस्कार-अपमान-गरल
जे भेटि रहल सभ पी लै' छी
जीबऽ ले' विवश बनल छी तेँ
कहुनाकऽ जिनगी जी लै' छी

सुख-भोग अतीतक तीत घोर
अन्तरमे बनि पजरय अङोर
टूटय ने कहीं धीरजक डोर
काँपय ने ठोर तेँ सी लै' छी

जीबऽ ले' विवश बनल छी तेँ
कहुनाकऽ जिनगी जी लै' छी

छल सम्बल पथक, पहाड़ बनल
अमृत बनि विषश आहार बनल
जे अँटकि रहल कण्ठक भीतर
ने घोँटै' छी ने उगिलै' छी

जीबऽ ले' विवश बनल छी तेँ
कहुनाकऽ जिनगी जी लै' छी

कानब नहि रहल स्वभाव हमर
जग हँसय पीचि कऽ घाओ हमर
ने नापि सकय क्यो पीड़ हमर
दृग-नीर दृगेमे पी लै' छी

जीबऽ ले' विवश बनल छी तेँ
कहुनाकऽ जिनगी जी लै' छी

मुजौना, पो०-नीरपुर, जि.-समस्तीर

महान राष्ट्रिय नेता

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय

: श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' :

भारतवर्ष सदासँ चिन्तकक भूमि रहल अछि। मनुक ई उक्ति—"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" सिद्ध करैत अछि जे मानव-धर्मक निरूपण सर्वप्रथम एही देशमे भेल आ संसार सभ्यता ओ संस्कृतिक पाठ एही देशमे आविर्भूत चिन्तक, मनीषीलोकनिसँ सिखलक। वशिष्ठ-विश्वामित्र, जनक-याज्ञवल्क्य, गौतम-कपिल-कणाद, गीतागायक भगवान कृष्ण, अहिंसोपदेशक महात्मा बुद्ध आदि अतिशय प्राचीन भऽ जाइत गेलाह, परन्तु निकट भूतमे जँ दृष्टि लऽ जाइत छी तँ योगिराज अरविन्द, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि देवेन्द्रनाथ, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द आदि शताधिक महापुरुषक नाम समक्षमे आबि जाइत अछि जे मानवरत्न लोकनि सम्पूर्ण मानवजातिक कल्याणक हेतु सतत् चिन्तनशील रहलाह।

चिन्तकलोकनिक एही श्रृंखलामे गाँथल एक रत्नक नाम थिक पण्डित दीनदयाल उपाध्याय। हिनक जन्म आश्विन कृष्ण त्रयोदशी वि. सं. १९७३, तदनुसार २५ सितम्बर १९१६ ई० कें भेलनि। हिनक मातामह पं. चुन्नीलाल शुक्ल जयपुर-अजमेर रेलवे लाइनपर स्थित धनकिया नामक रेलवे स्टेशनक स्टेशन मास्टर रहथिन। ओतहि रेलवे क्वार्टरमे हिनक जन्म भेलनि। हिनक पितामह पं. हरीराम शास्त्री अपना समयमे ज्योतिषशास्त्रक उद्भट विद्वानमे परिगणित होइत छलथिन, परन्तु हिनक पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कयलथिन आ अपन श्वसुरक सहयोगसँ उत्तर प्रदेशक जलेसर रोड स्टेशनक स्टेशन मास्टरक पदपर काज करैत रहथिन। पं. दीनदयालजीक शैशव ओतहि रेलवे क्वार्टरमे बितलनि। एकरा एक टा अद्भुत संयोग कहबाक चाही जे जन्म रेलवे क्वार्टरमे तथा मृत्यु रेलक डिब्बामे भेलनि। ११ फरवरी १९६८ कें हिनक मृत शरीर मुगलसरायक रेलवे यार्डमे पाओल गेलनि। पटना अबैत काल कोनो आततायी द्वारा हिनक दुखद अन्त कऽ देल गेलनि।

जखन उपाध्यायजी मात्र ७ वर्षक छलाह तँ हिनक मातापिता हिनका सर्वदाक हेतु अनाथ छोड़ि एहि पाँचभौतिक शरीरकें त्यागि देलथिन। परन्तु हिनक नामकरण एहन कऽ गेलथिन, एहन सार्थक नाम, 'यथा नाम तथा गुणः' उक्तिकें सर्वथा चरितार्थ करऽवला नाम बड़ विरले व्यक्तिक होइत छनि। दीनदयाल जीक हृदयमे दीनक प्रति जे दयालुता छलनि से हिनका देश, समाज ओ दलित मानव-समाजक सेवाक हेतु जीवनदानी बनबाक हेतु प्रेरित करैत रहलनि।

माता-पिताक आकस्मिक निधनक बाद हिनक भरण-पोषणक भार हिनक माम प. राधारमण शुक्ल वहन करऽ लगलथिन। परन्तु माता-पिताक सहज वात्सल्यसँ वंचित बालक दीनदयाल बाल्ये-कालेसँ विपत्तिक संग संघर्ष करबाक अभ्यासी भऽ गेलाह। एही ठामसँ अपना प्रति कठोर बनि जयबाक तथा ध्यानकें एकाग्र कऽ रखबाक प्रेरणा प्राप्त करऽ लगलाह। एकरे फलस्वरूप बालक दीनदयाल बालसुलभ सहज चपलतासँ दूर, प्रौढ़ जकाँ अतिशय गम्भीर ओ एकान्तप्रिय होइत गेलाह। यैह गम्भीरता हिनका विद्या अर्जन करबाक दिशामे उत्प्रेरित करैत रहलनि। सीकरक कल्याण हाइ-स्कूलमे पढ़ऽ लगलाह आ अजमेर बोर्डक मैट्रिक परीक्षा जखन देलनि तँ बोर्डमे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। एकर पूर्वाभास ने हिनका शिक्षकलोकनिकें छलनि ने अभिभावककें। आनो ई आशा नहि छलनि जे सर्वप्रथम होयबाक योग्य छी। मानसिक एकाग्रताक एक ऐतिहासिक उदाहरण एकरा भेटैत छथि आ दोसर उदाहरण स्वर्गीय उपाध्यायजी उपस्थित कयलनि। एहि हेतु स्वर्णपदकसँ पुरस्कृत कयल गेलाह। छात्रवृत्ति भेटऽ लगलनि। बाधहीन, मातृ-पितृ-विहीन, परमुखापेक्षी भऽ जीवनयापन करैत बोर्डमे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ लेब केहन अप्रतिम प्रतिभासँ सम्भव भऽ सकैत छैक ई बात बुद्धिजीवी वर्ग अपना ऊहिसँ बूझि सकैत छथि। प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण भेलाक बाद तँ उपाध्यायजीक जीवनक बाट प्रशस्त भऽ गेलनि। राजस्थानक पिलानी इण्टर कालेजसँ इण्टरमीडियट परीक्षामे सेहो प्रथम श्रेणी भेलनि। ओतऽ सँ बहरयलाक बाद सनातन धर्म कालेज कानपुरसँ बी० ए० परीक्षा देलनि, ओहूमे हिनका प्रथम श्रेणी प्राप्त भेलनि। एम० ए० मे पढ़बाक हेतु आगरा सेन्ट जान कालेजमे नाम लिखौलनि। एम० ए० क द्वितीय वर्षमे रहथि तँ हिनक एक बहिन, जनिकासँ वात्सल्य भेटैत छलनि, बड़ जोर अस्वस्थ भऽ गेलथिन। हुनक प्राकृतिक चिकित्साक हेतु पहाड़पर लऽ जाय पड़लनि। फलतः एम० ए० क परीक्षा नहि दऽ सकलाह।

१९३७ ई० मे जखन ई कानपुरमे बी० ए० क छात्र छलाह तँ हिनक परिचय राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक प्रख्यात कार्य-कर्ता (सम्प्रति सह सरकार्यवाह) श्री भाऊरावजी देवरसजीसँ भेलनि। नामकें सार्थक करबाक यैह सुयोग हिनका भेटलनि आ ई अपनाकें राष्ट्रक सेवाक हेतु सर्वतो-भावेन समर्पित कऽ देलनि।

१९४२ ई० मे पं० दीनदयालजी लखीमपुर जिलाक जिला प्रचारकक रूपमे नियुक्त भेलाह से १९५२ ई० मे अ० भा० जनसंघ सदृश राष्ट्रवादी राजनीतिक संघ-टनक प्रथम अधिवेशनमे महामन्त्री निर्वा-चित होयबाक पूर्व धरि संघ कार्यमे अपनाकें नियोजित रखने रहलाह। अपन कर्तव्यक प्रति जे हिनक निष्ठा छलनि तकर आभास १०.३.४४ ई० मे अपन ममिऔत श्री बनवारीलाल शुक्लक नाम लिखल एक पत्रसँ होइत अछि। ई पत्र पाञ्चजन्यक २८ अप्रैल १९६८ ई० मे प्रकाशित कान्ति-स्मरण विशेषांकक द्वितीय भागमे प्रकाशित भेल छनि। ओहि पत्रमे राष्ट्रिय चरित्र-निर्माणक हेतु हिनक उत्कट लालसा, देशक भविष्यक हेतु चिन्ता तथा अपन कर्तव्यक प्रतिनिष्ठा एक एक शब्दसँ प्रकट होइत छनि। दू चारि पाँती पत्रक मैथिली रूपान्तर उदा-हरणार्थ राखल जा सकैछ। उपाध्यायजी ओहि वृहत्पत्रमे एक ठाम लिखने छथिन "एक स्वयं सेवकक जीवनमे संघ कार्यक कतेक महत्व छैक, खेद! तोँ एकरा बुझैत रहितहक। तोँ जनैत छह जे साधा-रण रूपसँ जीवन-यापनक अनुकूल योग्यता एवं साधन अछैत हम ओहि मार्गकें छोड़ि दोसर मार्गकें स्वीकार कयल अछि।... हम जनैत छी जे यदि आइ दशो टाकापर कतहु हम नोकर रहितहुँ आ छुट्टी लऽ कऽ आयल रहितहुँ तँ तोरे लोकनि चिन्तित रहितह जे समयपर हम अपना नौकरीपर पहुँचि जाइ। की समाजक काज एक नौकरीओक समान महत्व नहि रखैत अछि?

राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक प्रार्थनामे कहल परं वैभवं नेतुमेतत्स्वराष्ट्रम् लक्ष्यकें पूर्ण करबाक हेतु श्रुतज्ञैवयस्का?कण्टकीर्ण मार्गम्कें उपाध्यायजी अपन जीवनक हेतु चुनलनि। १९५२ ई० सँ १९६७ ई० धरि जनसंघक महामन्त्रीक पद-भार सम्हारैत

(शेष पृष्ठ २४ पर)

धार्मिक कथा

गणेशक जन्म

पार्वतीक स्तुतिसँ प्रसन्न भऽ श्रीकृष्ण गणेशक रूपमे पार्वतीक ओतऽ जन्म लेलनि। शिव-पार्वतीकेँ अतिशय आनन्द भेलनि। बालक गणेशकेँ देखऽ लेल सभ देवी-देवता आबि आशीर्वाद देलथिन। ब्रह्मा, विष्णु, धर्म, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री, मेनका, वसुन्धरा आदि सभ अपन गुणानुरूप आशीर्वाद गणेशकेँ देलथिन। एहिठामे महादेवक ओतऽ सुर-समुदायक एक नीक जमघट भऽ गेल छल। ओ सभ बैसले छलाह कि सूर्यपुत्र शनिदेव सेहो गणेशकेँ देखऽ लेल ओतऽ पहुँचलाह। हुनक मुख अत्यंत नम्र आ आँखि किछु मूनल जकाँ छलनि। मोन हुनक एकमात्र श्रीकृष्णक स्मरणमे लागल छलनि। शनि देवगण आ मुनिगणकेँ प्रणाम कऽ हुनक आज्ञासँ शिशु गणेशकेँ देखबा लेल भीतर गेलाह। पार्वती गणेशकेँ कोरामे लेने छलथिन। शनिदेव मुँह झुकौने छलाह आ ओही स्थितिसँ पार्वतीकेँ प्रणाम कयलनि। पार्वती हुनका टोकि देलथिन।" शनिदेव, एखन अहाँक मुँह लटकल किएक अछि आ अहाँ हमरा सभ दिस तकैत किएक नहि छी?

शनि अपन कर्मगतिकेँ कहऽ लगलाह—"भगवती, की कहू? सभ जीव अपन कर्मानुसार फल भोगैत अछि। हम बाल्यावस्थेसँ श्रीकृष्णक भक्त छलहुँ। निरन्तर हमर मोन श्रीकृष्ण ध्यानमे लागल रहैत छल। विषयसँ विरक्त भऽ हम तपस्यामे रत रहैत छलहुँ। तैयो बाबूजी हमर विवाह चित्ररथक कन्यासँ कऽ देलनि। ओहो सती-साध्वी नारी सतत तपस्यामे लीन रहैत छलि। एक दिन ऋतुस्नान कऽ ओ हमरा लग आयलि। हम तँ भगवद् वन्दनामे लागल छलहुँ। बाह्य जगत्क किछु ओ ज्ञान हमरा नहि छल। पत्नी अपन ऋतु कालकेँ निष्फल जानि हमरा शाप दऽ देलक "अहाँ आब जकरा दिस ताकब सैह नष्ट भऽ जायत।" जखन हमर प्रार्थना समाप्त भेल तँ हम बुझलिऐक। किन्तु आब तँ ओ शापसँ मुक्त करयबामे असमर्थ छलि। अतः पश्चात्ताप करऽ लागलि। हे माय, तहियासँ हम कोनो वस्तुकेँ अपना आँखिसँ नहि देखैत छी। कदाचित् जीवहिंसा ने भऽ जाय एहि भयसँ अपन मुँहकेँ नीचाँ कयने रहैत छी"। पार्वतीकेँ शनिक ई खिस्सा सुनि हँसी लगलनि। सभ किछु बुझितो पार्वती शनिकेँ हुनक कथनक परीक्षा करऽ लेल अपना आ बच्चा गणेश दिस ताकऽ कहलथिन। शनिदेव ऊहापोहमे पड़ि गेलाह जे गणेशकेँ देखी वा नहि देखी। देखलापर तँ अवश्य ओकर अनिष्ट भऽ जयतैक। तैयो ओ धर्मकेँ साक्षी बना बच्चा गणेशकेँ देखबाक निश्चय कयलनि। खिन्न तँ ओ पूर्वेसँ छलाह। तथापि बाम आँखिक कोरसँ बच्चाक मुँह दिस तकलनि। हुनक दृष्टि पड़िते गणेशक माथ शरीरसँ फराक भऽ गेलनि। शनि तुरते आँखि फेरि नीचाँ दिस ताकऽ लगलाह। गणेशक शोणितसँ लथपथ शरीर तँ मात्र पार्वतीक कोरामे पड़ल रहि गेलनि किन्तु माथ अपन अभीष्ट गोलोकमे जा श्रीकृष्णमे प्रविष्ट भऽ गेलनि। पार्वती चिहुँकि कऽ कानऽ लगलीह आ उमत्त जकाँ भूमिमे खसि मूर्छित भऽ गेलीह। उपस्थित देवगण, महादेव आ कैलासवासीकेँ ई दृश्य देखि बड़ आश्चर्य भेलनि।

एही बीच भगवान् विष्णु स्थितिकेँ सम्हारबाक प्रयत्नमे लागि गेलाह। ओ गरुड़पर चढ़ि तुरन्ते उत्तर दिशामे स्थित पुष्पभद्रा नदीक निकट पहुँचलाह। नदी तटपर वनमे स्थित एकटा गजेन्द्रकेँ ओ देखलनि। गजेन्द्र निद्राक वशीभूत भऽ धीया-पूतासँ घेरल हथिनीक संग सूति रहल छल। भगवानकेँ अवसर भेटलनि ओ सुदर्शनचक्रसँ ओकर मस्तककेँ काटि लेलथिन आ गरुड़पर राखि विदा भेलाह। संयोगसँ हथिनीक निन्न टुटलैक तँ ओ ई विचित्र दृश्य देखलक। ओ विलाप करैत अपन धीया-पूताकेँ उठौलक। हथिनी भगवान्क स्तुति करऽ लागल। भगवान् प्रसन्न भऽ ओकरा वरदान देलथिन आ दोसर हाथीक मस्तक काटि ओकर पतिक शरीरमे जोड़ि देलथिन। हाथीकेँ ब्रह्मज्ञानसँ जीवित कऽ कल्पपर्यंत जीवित रहबाक वरदान सेहो देलथिन। पुनः भगवान् कैलाश आबि गणेशक शरीरमे हाथीक मस्तक जोड़ि देलथिन। मन्त्रबलसँ गणेश जीवित भऽ गेलाह।

भगवान् पार्वतीकेँ बुझा-सुझाकऽ चुप कयलनि। चारूकात प्रसन्नता व्याप्त भऽ गेल। सभ उपस्थित देवी-देवगण बालककेँ उपहार देलथिन। विघ्नशान्ति करा कऽ महादेव ब्राह्मण भोजन करौलनि आ यथेष्ट दान-दक्षिणा देलनि। शनिदेवकेँ जखन पार्वती लज्जायुक्त देखलनि ओ हुनका ओही समुदायमे शाप दैत कहलथिन, "अहाँ, अङ्गहीन भऽ जाउ।"

पं० दीनदयाल उपाध्याय

(पृष्ठ 13 क शेषांश)

१९६७ मे जनसंघक अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह आ एही पदपर रहैत अपन पार्थिव शरीरक त्याग कयलनि।

राष्ट्रक प्रति चिन्तनक प्रकार हिनक अपन छलनि। कर्तव्यक प्रति निष्ठा अनकक प्रति आदर, धर्मक प्रति श्रद्धा ओ राष्ट्रक प्रति जीवनार्पण हिनक जीवन-दर्शन छलनि। हिनक विश्वास छलनि जे अपन पुरुषार्थक बलेँ जे राष्ट्र आत्म-रक्षा करबामे सक्षम रहत सैह एहि भौतिकवादी युगमे अपन अस्तित्व अक्षुण्ण राखि सकैत अछि। ओ पुरुषार्थ चरित्रक बलेँ उत्पन्न भऽ सकैत छैक। अतः उपाध्यायजी चरित्र निर्माणपर तेँ बेसी बल देल करथिन।

एखन जाहि समाजवादक हूलि सौंसे संसार मचौने अछि, उपाध्यायजी ओहिसँ सहमत नहि छलाह। हुनक मन्तव्य छलनि जे समाजवादसँ श्रेयस्कर समन्वयवाद अछि। समाजवादमे व्यक्तिनिष्ठाकेँ विकसित होयबाक पर्याप्त स्थान छैक। व्यक्तिनिष्ठासँ वैषम्य बढ़ैत छैक। भारत सन राष्ट्रक हेतु समन्वयवादकेँ अनुकूल ओ उपयुक्त मानैत छलाह। उपनिषद्मे कहल गेल चरैवेति चरैवेति उक्तिक अनुयायी रहितो छुच्छे चलने लक्ष्यसिद्धि माननिहार नहि, प्रत्युत ओहि हेतु एहन लक्ष्य निरूपित करब आवश्यक मानैत छलाह जाहिसँ मानव मात्रक कल्याणक मार्ग प्रशस्त भऽ सकैक। पं० दीनदयाल उपाध्याय द्वारा कयल गेल चिन्तनकेँ हृदयंगम कऽ ओहि मार्गसँ राष्ट्रनिर्माणक दिशामे अग्रसर भेला सन्ताँ भारत राष्ट्रे नहि, सम्पूर्ण मानव जातिक महान उपकार भऽ सकैत छैक।

मिश्रटोला, दरभंगा।